International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 1 Ser. II || January 2021 || PP 67-68

विश्व रंग : एक अभूतपूर्व पहल

डॉ हेमन्त कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग,
एम एम एच कॉलेज, गाजियाबाद।

अरविन्द कुमार, शोध छात्र

यूं तो देश में अनेक सरकारी, गैर–सरकारी संस्थाएं हैं जो चित्रकारों, साहित्यकारों, रचनाकारों एवं संगीतज्ञों को प्रोत्साहित करती हैं, उन्हे मंच प्रदान करती हैं। किन्तु पिछले कई दशकों से इन तमाम तरह की संस्थाओं में जो चल रहा है अथवा जो हो रहा है वह संतोषजनक नहीं है, जिस कारण अधिकांश रचनाकार इन संस्थाओं की कार्य प्रणाली से अथवा इनमें व्याप्त भिन्न–भिन्न विसंगतियों से असंतुष्ट नजर आते हैं। इन संस्थाओं में बैठे लोग "अन्धा बांटे रेवड़ी..." वाली कहावत को अधिक चरितार्थ करते नज़र आतें हैं और कलाकार को जो उम्मीदें इन संस्थाओं से होती है वह अक़्सर टूटकर बिख़रती नज़र आती हैं। हालांकि यह बात सब पर लागू नहीं होती और न हर किसी को इससे फ़र्क पड़ता है लेकिन एक बहुत बड़ी कलाकार बिरादरी इससे प्रभावित होती है। विश्व–रंग को कलाकार के समक्ष उपस्थित इन तमाम समस्याओं के समाधान के एक विकल्प के रूप में देखा जा सकता है। जिसका प्रथम आयोजन वर्ष 2019 में मध्य–प्रदेश के रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय की छत्र–छाया में 4 से 10 नवम्बर के बीच हुआ।

शब्द–कुंजी : *विश्व–रंग, रबीन्द्रनाथ टैगोर, कला महोत्सव, अशोक भौमिक, भारत भवन*

कला को बढ़ावा देने के लिए कला की समझ के साथ–साथ निष्पक्षता भी बेहद ज़रूरी है जो इन तथाकथित संस्थाओं में अक़्सर देखने को नहीं मिलती, जिससे कई बार तो इन संस्थाओं के उद्देश्य पर ही सवालिया निशान लग जाता है। यह नहीं है कि यह समस्या अभी उत्पन्न हुई है। आरा, सूज़ा एवं अमृता शेरगिल जैसे कलाकारों नें भी अपने समय में अपने लेखों के ज़रिये इस तरफ़ इशारा किया था। किन्तु वर्तमान में यह समस्या प्रबल रूप से विद्यमान है। चित्र प्रदर्शित करनें या रचना प्रकाशित करानें में अक़्सर कलाकार को लोहे के चने चबाने पड़ जाते हैं और कई बार तो धनाभाव के कारण अथवा इन संस्थाओं के रवैये से त्रस्त होकर अनेक महत्वपूर्ण कलाकार तमाम तरह की जिम्मेदारियों

टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एव कला महोत्सव का उदघाटन करते कार्यक्रम के निदेशक श्री संतोष चौबे

के चलते अपनी कला को अपने ही भीतर छटपटाकर दम तोड़ते हुए देखने को मज़बूर हो जाते हैं। अपनी कला को बचाने के लिए, जब तक वे अवसाद के मकड़–जाल से बाहर आते हैं; तब तक बहुत देर हो चुकी होती है, बहुत कुछ मिट चुका होता है, बहुत कुछ लुट चुका होता है। वो कहतें हैं न कि, **"बरसात समय से न हो, तो गरीब किसानों की फसलें अक्सर सूख जाया करती हैं"।** पर इन तमाम दिक्कतों के बावजूद दिल के किसी कोने में उम्मीद का कोई न कोई सितारा हमेशा टिमटिमाता रहता है, जो हमें अंधेरे से उजाले की ओर ले जाता है।

'विश्व रंग' भी इस दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। जिसमें संभवतः विश्व में पहली बार इतने बड़े पैमाने पर चित्रकारों, साहित्यकारों, रचनाकारों एवं कलाओं की विभिन्न विधाओं के कलाकारों को एकजुट होकर अपनी कला–संस्कृति एवं भाषाओं पर चिंतन–मनन करने का एक वैश्विक मंच प्राप्त हुआ है। यहाँ एक बात और भी महत्वपूर्ण है कि आज जहां अधिकांश शैक्षिक संस्थान बिजनेस का रूप ले चुके हैं, ऐसे समय में **'रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भोपाल)'** की ये अनूठी पहल भारतीय कला–संस्कृति के इतिहास में अवश्य रेखांकित की जानी चाहिए। मेरा मानना है कि यह न केवल अन्य विश्वविद्यालयों के लिए भी अनुकरणीय है वरन देश में स्थापित कला, साहित्य, संगीत एवं सांस्कृतिक संस्थानों के लिए भी प्रेरणादायक है।

एक चित्रकार की नज़र से देखूँ तो 'विश्व–रंग' का यह आयोजन कई मायनों में महत्वपूर्ण रहा है। पहला तो इस दृष्टि से कि इस आयोजन के बहाने **गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर** की कला विरासत का एक बड़ा और महत्वपूर्ण कला भंडार सामने आया है, जिसके पीछे समकालीन कला के जाने–माने चित्रकार एवं कला आलोचक **अशोक भौमिक** की महीनों की तपस्या रही है। निश्चय ही यह कला–भंडार रबीन्द्रनाथ टैगोर की कला की नए सिरे से व्याख्या करेगा और समकालीन कला के इतिहास में उनके महत्व को नए सिरे से स्थापित करेगा। शायद यही एक चित्रकार के रूप में उन्हे सच्ची श्रद्धांजलि होगी। दूसरा इसलिए भी कि **रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय,** फाइन आर्ट्स का कोई कोर्स संचालित नहीं करता है बावजूद इसके इस विश्वविद्यालय नें देश भर के चित्रकारों को **'भारत भवन भोपाल'** में चित्र प्रदर्शित करने का एक शानदार अवसर प्रदान किया; यही नहीं, चित्रकारों से इसके लिए कोई शुल्क भी नहीं लिया गया। इससे भी बड़ी बात यह है कि जहां देश भर से इसके लिए लगभग एक हजार चित्रकारों के करीब 158 चित्रों का चयन, प्रदर्शन के लिए किया गया वहीं इनमें से पाँच सर्वश्रेठ चित्रों के रचनाकारों को सम्मान स्वरूप इक्यावन–इक्यावन हजार रुपए की पुरस्कार राशि भी प्रदान की गयी। पुरस्कृत चित्रकारों में **'अनुपमा डे'** खैरागढ़, **'सोनलप्रिया सिंह'** भोपाल, **'कालीपदा'** पालघर, **'चारुदत्त सूर्यकांत पांडे'** पुणे एवं **'उत्कर्ष जायसवाल'** इलाहाबाद से थे। इसमें महत्वपूर्ण बात है कि यहाँ न कोई प्रथम था, न द्वितीय और न तृतीय। सभी समान रूप से पुरस्कृत थे। सभी को समान राशि प्रदान की गयी थी जोकि कलाकारों के बीच, छोटे–बड़े के अहम की खाई को भी पाटती है और उन्हे समभाव की एक दृष्टि भी प्रदान करती है।

पुरस्कृत चित्रकार 'अनुपमा डे' अपने ग्राफिक प्रिंट 'Petrification' के साथ

आज के दौर में जहां आर्ट गैलरियाँ कुकुरमुत्तों की तरह उग आई हैं और जिनका उद्देश्य सिर्फ़ कलाकारों की जेब काटकर अपना उल्लू सीधा करने तक ही सीमित हो गया है; सरकारी संस्थाएं जहां सिर्फ खाना पूर्ति करके कागज़ी उपलब्धियां गिना रही हैं और अधिकांश शैक्षिक संस्थान भी महज़ मैकाले के देखे स्वप्न को साकार करते नजर आते हैं; ऐसे में भारतीय कला, साहित्य, संगीत, संस्कृति एवं भाषाओं पर चिंतन के प्रति **'रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय'** द्वारा कल्पित **'विश्व–रंग'** की अवधारणा निश्चय ही भारतीय कला–संस्कृति के उत्थान में मील का पत्थर साबित होगी। **'विश्व–रंग'** जैसे कार्यक्रम न केवल आर्थिक तंगी से जूझते नवोदित और संघर्षशील कलाकारों के लिए अर्थपूर्ण होंगे बल्कि सम्पन्न कलाकारों के लिए भी ये एक बेहतर मंच प्रदान करेंगे।

यद्यपि भारत के हृदय–प्रदेश, मध्यप्रदेश की मिट्टी आदिकाल से ही कला–संस्कृति की विरासत को सजोहनें में अग्रणीय रही है। जिसका सबसे बड़ा प्रमाण तो भीमबेटका की कन्दराओं में उकेरा गया कला संसार है जो अपनी कला–संस्कृति की अनमोल विरासत को सजोहने के क्रम में, विश्व के कुछ प्राचीनतम उदाहरणों में से एक हैं, किन्तु आज जबकि लोग अपनी कला, संस्कृति एवं बोलियों से धीरे–धीरे दूर होते जा रहें हैं और इस आधुनिकता के युग में कोई भी पलटकर इस दिशा में प्रयास करने को भी राज़ी नहीं है, ऐसे में **'टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव : विश्व–रंग'** नें हमें हमारी कला, साहित्य, संस्कृति एवं भाषाओं से पुनः रूबरू होने का एक सुअवसर प्रदान किया है जोकि विश्व भर में फैले भारतीय संस्कृति के वाहको को एकजुट करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।